ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

हिंदी के सूफी प्रेमाख्यान काव्य में लोकाचार

Ethos in Hindi Sufi Premeditation

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

संगीता गर्वा
सहायक आचार्य,
हिंदी विभाग,
ग्रामीण महिला महाविद्यालय
सीकर राजस्थान, भारत

सारांश

हिंदी साहित्य में प्रेमाख्यान काव्य की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। इस काव्य परंपरा में मुस्लिम सूफी कवि तथा गैर मुस्लिम कवियों ने प्रचलित तथा प्रसिद्ध प्रेम कहानियों को लेकर अनेक प्रबंध काव्यों की रचना की है।

प्रस्तुत शोध लेख में हिंदी के प्रमुख प्रतिनिधि कवियों की रचनाओं को ही विवेचन का आधार बनाया गया है। इसके अंतर्गत मुल्ला दाऊद की चांदायनए कुतुबन कृत मिरगावती, मलिक मुहम्मद जायसी की पदमावत, मंझनकृत मधुमालती तथा उसमान कवि कृत चित्रावली नामक ग्रंथों को विषय के प्रतिपादन के लिए केंद्र में रखा है। प्रस्तुत शोधपत्र में हिंदू समाज के रीति.रिवाज और लोकाचारों का निरूपण किया गया है। सूफी कवियों ने न केवल भारत के हिंदू समाज को बहुत निकट से देखा परखा था बल्कि ये कवि हिंदू समाज में समरस हो गये थे।यही कारण है कि हिंदू परिवारों में कब और कौन.कौन से रीति.रिवाज होते हैं इसकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म जानकारी इन सूफी कवियों को थी।

सूफी कवि यह भली.भांति समझते थे कि हिंदू समाज में संतान की उत्पत्ति को अनिवार्य माना गया है। विशेष कर पुत्र जन्म के बिना तो जीवन को निरर्थक समझा गया है। पुत्र के जन्म से ही वंश चलता है, पुत्र ही पिता की अंत्येष्टि व पिंडदान करता है। इसलिए पुत्र प्राप्ति के लिए साधु.संतों की सेवाए अथवा किसी देवता की उपासना व तपस्या का उल्लेख मिलता है। भगवान राम और उनके भाइयों का जन्म भी ऋषि के अनुष्ठान से संभव हुआ था। प्रेमाख्यान काव्य परंपरा के कतिपय कवियों ने भी भी इसका संकेत दिया है।

पुत्र–जन्म के बाद पंडित, ब्राह्मण या ज्योतिषी को बुलाकर लग्नपत्र या जन्म कुंडली, ग्रहदशा भविष्य कथन आदि की जानकारी ली जाती है। तदनंतर छठ पूजन, नामकरण संस्कार, प्रीतिभोज, पहिरावनी आदि संस्कार संपन्न होते हैं इन लोकाचारों का सूफी हिंदी कवियों ने मनोरम, रोचक किंतु स्वाभाविक चित्रण किया है।

सूफी कवियों ने अपने कथानायक के विद्यारंभ संस्कार का भी वर्णन किया है। इस शिक्षा संस्था के अंतर्गत राजकुमारों को किस प्रकार की शिक्षा दी जाती थी इसका उल्लेख भी अपनी कृतियों में किया है। भारतीय संस्कृति में विवाह नामक संस्था का अत्यंत महत्व रहा है। विवाह के समय भी अनेक रीति–रिवाज तथा लोकाचार संपन्न होते हैं। इन सूफी कवियों ने इन लोकाचारों का विशद् विवेचन किया है।

यह ध्रुव सत्य है कि इस संसार में जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। तदर्थ मृत्यु के पश्चात् भी कुछ क्रियाएं भी संपन्न की जाती हैं जिसे अंत्येष्टि क्रिया कहते हैं। विवेच्य प्रबंध काव्यों में अंत्येष्टि क्रिया लोकाचार भी यथा यह प्रसंग निरूपण हुआ है।

समग्र रूप से विवेचन करने के उपरांत कहा जा सकता है कि हिंदी के सूफी प्रेमाख्यान काव्यधारा के कवि हिंदू समाज के चतुर चितेरे हैं। हिंदी साहित्य और हिंदू समाज इन कवियों का आभारी रहेगा।

There has been a long tradition of love poetry in Hindi literature. In this poetic tradition, Muslim Sufi poets and non-Muslim poets have composed many poems about popular and famous love stories.

In the research paper presented, the works of the major representative poets of Hindi have been made the basis of discussion. Under this, texts like Mulla Dawood's Chandyanaye Qutuban Mirgavati, Malik Muhammad Jayasi's Padmavat, Manjhikrit Madhumalati and Usman Kavi Chitravali have been placed for the rendering of the subject. The paper presented depicts the customs and ethos of Hindu society. Sufi poets not only looked at the Hindu society of India very closely, but these poets became homogenous in the Hindu society. This is the reason that when and who in the Hindu families are recited, the subtle information about these Sufi The poets were

Sufi poets well understood that the origin of progeny is considered to be indispensable in Hindu society. In particular, life without a son is considered meaningless. The offspring moves from the birth of the son, the son does the funeral and pinddaan of the father. Therefore, to get a son, there is a mention of the services of saints and saints or the worship and penance of a deity. The birth of Lord Rama and his brothers was also made possible by the ritual of the sage. Certain poets of the pre-poetry poetic tradition have also indicated this.

After the birth of a son, a Pandit, a Brahmin or an astrologer is called and information about Lagna Patra or horoscope, planetary prediction etc. is obtained. Subsequently, the rituals of Chhath Pujan, Naming ceremony, Pritibhoja, Pahiravani, etc. are performed.

Sufi poets have also described the Vidyabhava rites of their storyline. The kind of education used to be given to princes under this education institution has also been mentioned in his works. The institution called Vivah has been extremely important in Indian culture. Many customs and ethos are also performed at the time of marriage. These Sufi poets have detailed these ethos.

It is true that the death of the person born in this world is also certain. Some actions are also performed after ad hoc death, which is called the funeral procession. Funeral action ethos is also mentioned in the management articles as in this context.

After a thorough discussion, it can be said that the poets of the Sufi premiakhan poetry of Hindi are clever minds of Hindu society. Hindi poets and Hindu society will be grateful to these poets.

मुख्य शब्द : प्रेमाख्यान काव्य, सामाजिक लोकाचार, संतान की महत्ता, जन्मोत्सव के लोकाचार, लग्न एवं नामकरण, छठ पूजा, .पहिरावनी व प्रीति भोज, विवाह संस्कार, विद्यारंभ संस्कार, अंत्येष्टि संस्कार।

Pre-Scripture Poetry, Social Ethos, Importance Of Children, Ethos Of Birth Anniversary, Lagna And Naming, Chhath Puja, Pahiravani And Preeti Bhoj, Marriage Ceremony, Vidyabharam Ceremony, Funeral Rites.

प्रस्तावना

भूमिका

हिंदी काव्य परंपरा के इतिहास में सूफी प्रेमाख्यान काव्यधारा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस काव्यधारा का वैशिष्ट्य इस रूप में है कि इस धारा के कवियों ने सहज और सरल भाषा में हिंदू समाज में प्रचलित किसी प्रेम कहानी को आधार बनाकर ऐसे मनोरम प्रबंध काव्यों की रचना की है जिसका हिंदू जनता ने हृदय से स्वागत किया है। यद्यपि इन प्रेमकथाओं में किसी राजकुमार अथवा किसी राजकुमारी के प्रेम को आधार बनाया गया है किन्तु वे राज परिवार के होते हुए भी सामान्य लोक के जीवंत पात्र लगते हैं। साधारण से साधारण पाठक भी इन कवियों की किसी रचना को पढ़ना शुरू कर देता है तो वह रचना अपने पाठक को बांधे रखती है। हिंदी साहित्य में प्रेमाख्यान काव्य की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। इस काव्य परंपरा में मुस्लिम सूफी कवि तथा गैर मुस्लिम कवियों ने प्रचलित तथा प्रसिद्ध प्रेम कहानियों को लेकर अनेक प्रबंध काव्यों की रचना की है। प्रस्तुत शोध लेख में हिंदी के प्रमुख प्रतिनिधि कवियों की रचनाओं को ही विवेचन का आधार बनाया गया है।इसके अंतर्गत मुल्ला दाऊद की चांदायन, कुतुबन कृत मिरगावती, मलिक मुहम्मद जायसी की पदमावत, मंझनकृत मधुमालती तथा उसमान कवि कृत चित्रावली नामक ग्रंथों को विषय के प्रतिपादन के लिए केंद्र में रखा है।

सूफी शब्द का अर्थ

सूफी फारसी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है ऊनी कपड़े पहनने वाला; संत; पवित्र;। पु.संसार की आसक्ति से मुक्त होकर ईश्वर प्राप्ति की साधना करने वाला सूफिया संप्रदाय का अनुयायी।1 हिंदी साहित्य कोश में सूफी शब्द का निर्वचन करते हुए लिखा गया है कि ''इस्लाम के रहस्यवादी 'सूफी नाम से प्रख्यात हैं। सूफियों के दर्शन को 'तसव्वुफ' कहा गया है। सूफी ऐसे साधक थे, जो विरक्त,संसार–त्यागी, परमात्मा के प्रेम में बेसुध रहते थे। उनके लिए न इस लोक के प्रलोभनों का कोई अर्थ था और न स्वर्ग की ही उनको चिंता थी।उनकी चिंता का एक मात्र विषय परमात्मा था। उसे पाने के लिए उसके साथ 'एकमेक' होने के लिए ये साधक सभी प्रकार की साधना के लिए प्रस्तुत रहते थे। वैसे प्रेम को इन्होंने सर्वोच्च स्थान दिया है।2

प्रेमाख्यान काव्य

सूफी प्रेमाख्यान काव्यधारा

इस काव्य परंपरा में जिन कवियों की रचनाएं उपलब्ध होती हैं वे हैं, मुल्ला दाऊद और उनकी चांदायन। दूसरे कवि हैं कुतुबन, इनकी रचना का नाम है–मिरगावती। जायसी इस परंपरा के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। जायसी कृत पदमावत सूफी प्रेमाख्यान काव्यधारा की प्रसिद्ध रचना है तथापि अखरावट, आखिरीकलाम, चित्ररेखा, कहरानामा, मसलानामा उनकी उल्लेखनीय कृतियां हैं। मंझन का इस काव्यथारा में अपना विशिष्ट स्थान है। मंझन कृत मधुमालती एक सरस रचना है। कवि उसमान की चित्रावली इस धारा की सरस प्रेम कहानी है। शेख नबी की 'ज्ञानदीप' तथा जानकवि के द्वारा विरचित अनेक प्रेमाख्यान काव्य के अंतर्गत 'रतनावती', 'कनकावती', 'कंवलावती' तथा 'कथा खिजरखां साहिबजादे–देवल दे' प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

गैर सूफी प्रेमाख्यान काव्यधारा

असाइत कृत 'हंसावली', दामोदर कवि कृत 'लखमसेन पद्मावती कथा', ईश्वरदास कृत 'सत्यवती कथा', 'माधवानल कामकंदला', 'ढोलामारु रा दूहा', 'माधवानल कामकंदला चौपाई, नंददास कृत 'रूपमंजरी', 'प्रेमविलास प्रेमलता की कथा', 'छिताईवार्ता', आलमकृत 'माधवानल कामकंदला', 'रसरतन', 'नल दमयंती' संबंधी प्रेमाख्यान काव्य इत्यादि।

सामाजिक लोकाचार

संतान की महत्ता

हिंदू समाज में यह विश्वास रहा है कि कलियुग में संतान से ही मनुष्य को दूसरा जीवन मिलता है। पुत्र होने से माता पिता इस जगत में यश के भागीदार होते हैं और यदि पुत्र होता है तो ही युग–युग तक मनुष्य का नाम चलता रहता है या जीवित रहता है । पुत्र के बिना मनुष्यो के मर जाने के बाद कौन नाम लेवा रहता है और पुत्र के बिना कौन पिंड दान करता है। इसलिए पुत्र हीन व्यक्ति का जीवन इस संसार में व्यर्थ हो जाता है तथा पुत्र रूपी दीपक के बिना माता–पिता का जीवन अंधकारमय हो जाता है। किंतु विधाता किसी को कुपुत्र प्रदान नहीं करे।

कलि संतति सेउं दोसरि, आऊ । बिन सुत जीवन जनम नसाऊ ।

सुत सेउं मांत पिता जग लहहीं । सुत सेउं नाउं जब (जियत ?)जुग रहहीं।

सुत बिनु मुवें नाउं को लेई । सुत बिनु को कत पिंडहि देई ।

सुत बिनु अंब्रिथा जीवन संसारा । सुत दीपक बिनु जग अंधियारा ।

पे सभ कहेउं सपूत कै बाता । जनि कपूत बंस देइ बिधाता ।3

जन्मोत्सव के लोकाचार

चूंकि प्रेमाख्यान के ये काव्य नायिका प्रधान हैं अतः कवियों ने कन्या के जन्म–लग्न आदि का भी सुंदर विवेचन किया है। मुल्ला दाऊद ने चांदायन में जातक के जन्म, लग्न, नामकरण एवं विद्यारंभ लोकाचार का वर्णन अपने पश्चातवर्ती कवियों की तुलना में कम विस्तार से दिया है जबकि बाद के सूफी कवियों ने अधिक विस्तार से लिखा है। दाऊद ने कथा नायिका के जन्म तथा विवाह प्रसंग को अत्यंत संक्षेप में प्रस्तुत किया है। चांदा के जन्म और तत्संबंधी लोकाचार का दो तीन कड़वकों में उल्लेख कर दिया है।

सहदेव मंदिर चांद 'अवतारी'। धरति सुरगि भई उजियारी ।
'पहिलिइ' घरी 'भएउ' अवतारू । 'दुइ रातन (नि) जानौ' 'सयंसारू'।
'सातव' चन्द्रु नखत भा मांगा । जानौ सूरु दिपइ 'तिसु' आगा ।
भई संपूरन 'चउदिसि' राती । चांद महर 'धिय पदुमिनि' जाती ।
राहू केतु 'दुइ' सेव कराहीं । 'सूकु' 'सनिछरु' 'पहरइं' जाहीं ।
'अउर' नखत 'ओरगावन' आछहिं 'पवरि' दुवारि ।
चांद चलत नर 'मोहहिं' जगत 'भएउ' उजियार ।।
'पांचउ' दिवसु छठी भइ राती । 'नेउता' गोवर 'छतीसउ' जाती ।
घर घर 'कहं कर टेका' आवा । 'अउ' तेहि 'पाढे (पाछें)' 'बाज बधावा' ।
मेहरी सहस 'सात' इक 'आई' । आंग मूंड 'सेंदुर अन्हवाई ।
बाँभन सभा आइ 'जो' बईठी । काढि पुरानु रासि गनि दीठी ।
'छठी क' आखरू 'दीख लिलारा' । 'उरधइ सों जाइहि' 'जम बारा ' ।
अगिनि 'पुरगु भा चांदहि' 'औ (अउ)' कट 'छुई' न जाइ ।
जस उजियारें 'फतिंगा' 'मरिहहि' राइ उडाइ ।।4

कवि कुतुबन कृत 'मिरगावती' में भी कथानायक का पिता सब प्रकार से सक्षम होते हुए भी एक पुत्र के लिए अत्यंत दुःखी है। वह ईश्वर से एक पुत्र देने के लिए प्रार्थना करता है और ईश्वर की कृपा से उसे पुत्र की प्राप्ति हो जाती है।

अरथ दरब हाथी बहु घोरा, गिनत न आउ भँडार ।
माँगै पूत दुउ कर जोरी, बेगि देहु करतार ।।
खोलि भंडार देइ सब लागा । जिन्ह पावा तिंह दारिद भागा ।।
भूखहि भुगुति पियासहि पानी । नाँगहि कापर दीन्ही आनी ।।
मन कामना जो पुरवइ आसा । मरम जानि नहिं करै निरासा ।।
जो बिधि सों मन ईंछा माँगी । पाइ सबै न एको खाँगी ।।
अस माँगा बिधि हम कों देहू । अरथ दरब धन पूत सनेहू ।।
जो माँगेसि सो पायसि बिधि सों, आसा रही न एको खाँग ।
एक न पूत तिह आहा घर वहि कैं, सो बिधि सों लइ माँग ।।
राजा पूत मँदिर औतारा । अति सरूप धनि (सिरजनहारा) ।।5

कवि उसमान कृत 'चित्रावली' प्रेमाख्याान में भी पुत्र की अनिवार्यता को स्वीकार किया गया है। इस प्रेमाख्यान के अनुसार नेपाल का राजा धरनीधर संतान की प्राप्ति के लिए राज–पाट त्याग कर शिव की आराधना करता है राजा की तपस्या से प्रसन्न होकर शिव राजा को वरदान देते हैं कि वे अपने अंश से राजा के पुत्र के रूप में अवतरित होंगे।6

लग्न एवं नामकरण

हिंदू समाज में पुत्र जन्म पर ज्योतिषी या पंडित से जातक के ग्रह नक्षत्र, जलवा पूजन, नामकरण आदि का मुहूर्त तथा लग्न विचार के बारे में पूछा जाता है । इस परंपरा के कवियों ने कथानायक के जन्म पर ज्योतिषियों के द्वारा लग्न विचार और जातक के भविष्य पर भी प्रकाश डाला है, इससे प्रतीत होता है कि इन कवियों को भारतीय ज्योतिष का अच्छा ज्ञान था। 'मधुमालती' में कवि मंझन ने इस पर विस्तार से विचार करते हुए लिखा है कि राजा ने ज्योतिषियों से उसका भविष्य फल, ग्रह नक्षत्र के बारे में जानना चाहा। ज्योतिषियों ने गणना करके बताया कि जातक का जन्म् मेष लग्न तथा सिंह राशि में हुआ है । अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश पर दसवें मास में उसका उच्च अवतार हुआ है । जातक के जन्म के समय चंद्रमा पांचवे भाव में था, सूर्य सातवें, शुक्र दसवें स्थान में और बृहस्पति नवें भाव में था। शनि ग्रह की ललाट पर दृष्टि थी। दशमी की रात्रि को उसका जन्म हुआ। यह बालक कामदेव के समान सुंदर, भाग्यवान और माता पिता का जीवन आधार था। बालक का नामकरण मनोहर किया गया —

बिरिध बैस जेत आस निरासा । राज मंदिल बिधि निर्मई आसा ।
संतति आस राज जौ पाई । करै लागु सुत आस बधाई ।
मेख लगन असुनी पैसारा । दसएं मांस ऊंच औतारा ।
पचएं ससि औ सूरुज सतएं । दसएं सुक्र बिरस्पति नवएं ।
दिस्टि सनीचर नखत निलारा । दसईं राति भएउ औतारा ।
मदन मूरति औ भागिवंत रानी राउ अधार ।
सुभ्भ महूरत औतारा राजा कुल उजियार ।।7

ज्योतिषियों ने कहा कि यह बालक छत्रपति सम्राट होगा। गंधर्व मुनि भी इसको जोहार करेंगें । समस्त नरेश इसकी सेवा करेंगें । यह युद्ध भूमि में साका करने वाला होगा। चौदह वर्ष पूर्ण करने पर इसको इसका प्रिय पात्र मिलेगा फिर यह उसके विरह में जोगी होकर निकलेगा।

मिरगावति के रचनाकार ने भी पुत्र के जन्म पर इसी प्रकार का वर्णन प्रस्तुत किया है। सब ब्राह्मण बैठकर गणना करने लगे। राशि, गुण, कर्म, स्वभाव पर विचार किया। पंडितों ने राशि की गणना करके बताया कि इस बालक की बराबरी कोई नहीं कर पायेगा। तुला राशि देखकर नामकरण किया गया,पंडितों ने राजकुंवर के सौभाग्य को बताया । उन्होंने देखा कि बहुत से उत्तम ग्रह हैं किंतु कुछ ग्रह कष्ट प्रदान करने वाले भी हैं। पंडितों ने बताया कि इस जातक को स्त्री का वियोग होगा और पंडितों ने बालक को आशीर्वाद देकर विदा ली—

राजा पूत मँदिर औतारा । अति सरूप धनि (सिरजनहारा) ।।
ससिहर जनौ पूनिउँ कर आहा । भरि उँजियार जगत महँ रहा ।।

राजैं पूत दिस्टि भरि देखा । भा आनन्द अस आउ न लेखा ।।
करम जोति मनि दिपै लिलारा । लखन बतीसों राजकुँवारा ।।
पण्डित औ बुधवन्त हँकारे । रासि गुनहु औ नखत उन्हाारे ।।
गुनि गुनि पतरा देखु, कौन गरह दहिनो सुद्ध ।
नाउ धरहु निरमल उत्तिम कै, लखन देखि सब बुद्ध ।।8

मधुमालती में भी पंडितों के द्वारा भविष्य कथन और नामकरण का ऐसा ही वर्णन उपलब्ध होता है —

भोर भएं पंडित जन आए । रासि परखि औ गरह गनाए ।
पंडितन गनि गुनि कहा बिचारी । होइ नरेस छत्रपति भारी ।
गन गंध्रप मुनि बार जोहारहिं । जग नरेस सभ सेवा सारहिं ।
लखनवंत बुधिवंत बिनानी । रन छत्री साका परवानी ।
दाता गरुव गरिस्टं गंभीरा । औ दयाल पर परखिहि पीरा ।
लखन चीन्ह रुद्र रेखा कंठ मांथ दुहुं पाउं ।
सिंघ रासि कुल दीपक धरेउ मनोहर नाउं ।।9

कवि उसमान ने 'चित्रावली' में ज्योतिषियों के द्वारा जन्म–कुंडली लिखने का विस्तार से वर्णन किया है। बालक के नामकरण, विभिन्न ग्रहों का कुंडली के भिन्न स्थानों पर होने का वर्णन उपलब्ध होता है उदाहरणार्थ–

भोर होत आए जोतिषी, पाटा गरह कुंडली लिषी ।
मिथुना लगन असु ओनीसी,उदे पुनवर्सु अति सुभ दीसी ।।
तिसरे सुर्ज चंद्रमा नएँ, दुसर बुद्ध सुक्र सँग लएँ ।।
सनमुख सूर ससी पुनि देखा, चौथे चरन सतभिषा सरेखा ।
राहु जनम दसएँ पुनि सनी, जिउ एगारहाँ जासौं धनी ।।
भौम एगरहे पुनि सुख देखा, गनपति हन बिकट गढ़ लेखा ।
राहु केतु दोऊ अपने ऊँचा, सीस छत्र गए सर्ग पहुँचा ।।
मनि माथे हरदै नषत, गनि गुनि कीन्ह बखान ।
होडा चक्र बिचारी के राखो नाउ सुजान ।।
कुम्भ रासि धन नाउ सुहावा, जनम पत्र लिखि बाँचि सुनावा ।
आयु सौ बरन्ह अधिकाई, बिरध होइ तहवाँ लहुँ पाई ।।10

ज्योतिषी ने बताया कि वह पृथ्वी पर छत्रपति सम्राट होगा । वह अपनी प्रिया के लिए दुःख सहेगा और योग पंथ में दस दिन रहेगा ।

पुहमी होइ छत्रपति राजा, पार दान कर बाजन बाजा ।11

छट पूजा संबंधी लोकाचार

मलिक मुहम्मद जायसी ने पदमावत में छट पूजा संबंधी लोकाचार का वर्णन किया है। जायसी ने पद्मावती के जन्म होते ही छट पूजन (षष्ठी पूजा) का वर्णन करते हुए लिखा है कि –

भै छठि राति छठीं सुख मानी । रहस कूद, सौं रैनि बिहानी ।।
भा विहान पंडित सब आए । काढ़ि पुरान जनम अरथाए ।।
उत्तिम घरि जनम भा तासू । चाँद उआ भुइ दिया अकासू ।।
कन्या रासि उदय जग कीया । पदमावती नाम अस दीया ।।
सूर प्रसंसै भएउ फिरीरा । किरिन जामि उपना नग हीरा ।।
तेहि तें अधिक पदारथ करा । रतन जोग उपना निरमरा ।।
सिंघलदीप भए औतारू । जंबूदीप जाइ जमबारू ।।

राम अजुध्या ऊपने, लछनाय बतीसो संग ।
रावन रूप सौं भूलिहे, दीपक जैस पतंग ।।12

अर्थात् जिस दिन छठी पूजी जाती है,उस रात जागरण किया गया। रातभर उत्सव हुआ। ज्योतिषी बुलाये गये और पंचांग निकालकर जन्म फल सुनाया। पंडितों ने कहा कन्या का जन्म उत्तम घड़ी में हुआ है। कन्या राशि है पृथ्वी पर चंद्रमा के समान उदय हुआ है कन्या राशि के अनुसार पदमावती नाम रखा गया है। पंडितों ने बताया कि इसका वर रत्न रूपी रत्नसेन उत्पन्न हो चुका है। इसका जन्म सिंहल दीप में हुआ है किंतु जीवन लीला जंबूदीप में समाप्त होगी। इसी प्रकार रत्नसेन के जन्म का भी वर्णन किया गया है। पंडितों ने आकर जातक की जन्म–लग्न, शारीरिक लक्षण पर विचार कर बताया कि यह बालक कुल का रत्न है। इसके मस्तक पर मणि शोभायमान है। इसकी जोड़ी उत्तम पदार्थ रूपी कन्या के साथ लिखी है। दोनों के मिलने पर सूर्य और चंद्र जैसा प्रकाश होगा। यह बालक जोगी बनकर सिंहलदीप पहुंचेगा और पदमावती को प्राप्त करेगा :—

तेहि कुल रतनसेन उजियारा । धनि जननी जनमी अस बारा ।।
पंडित गुनि सामुद्रिक देखा । देखि रूप औ लखन बिसेखा ।।
रतन सेन यह कुल निरमरा । रतन जोति मन माथे परा ।।
पदुम पदारथ लिखी सो जोरी । चाँद सुरूज अस होइ अँजोरी ।।
जस मालती कहं भौंर बियोगी । तस ओहि लागि होइ जोगी ।।
सिंघलदीप जाइ यह पावै । सिद्ध होइ चितउर लेइ आवै ।।
भोग भोज जस माना, विक्रम साका कीन्ह ।
परखि सो रतन पारखी, सबै लखन लिखी दीन्ह ।।13

जायसी की तरह उसमान ने भी छठी रात्रि उत्सव का रोचक वर्णन किया है । छठी के उत्सव में अनेक प्रकार के वाद्य बजते रहे। जैसे इंद्र की सभा होती है वैसे ही सभा का आयोजन किया गया। तरुणियों ने मंगलगीत गाये —

मधुमालती में कवि मंझन ने छठी रात्रि के उत्सव, पहिरावनी, उपहार तथा जेवनार का मनोरम चित्रण किया है—

छठी राति छठि बाजन बाजे । घर घर नगर बधावा साजे ।

सभ घर नगर उछाह कल्यानां । खोरि खोरि आनंद निसानां ।
राज गिरिह सभही सुनि आए । करै छतीसउ पौनि बधाए ।
भ्रिगमद तिलक चतुरसम अंगा । औ सोभित उर हार सुरंगा ।
मुख तंबोल सिर सेंदुर रोरा । गावहिं तरुनी होइ अंदोरा ।
सभ घर नगर बधावा औ सभ खोरि अनंद ।
सुरस कंठ सभ गावहिं धुरवा धुरपद छंद ।।14

पहिरावनी व प्रीतिभोज

भोर होने पर राजा ने छत्तीस कुलों को पहिरावणी प्रदान की। राजा ने सभी विप्र जनों को दक्षिणा देकर विदा किया। भाट–भटिनियों को राजा ने भंडार खोलकर बहुत धन दिया। सभी को मिष्टान्न और स्वादिष्ट भोजन कराया गया।

भोर भए होइ लागि बधाई, छत्तिस पौनि दीह पहिराई।
नृप कर कुस पानी जब लीहा, दछिना सकल विप्र कहँ दीहा।।
गाय सोन मुँदरी नग जरी, पाटंबर जरकसा पॉवरी।।
भाटन दै तुरग पहिराये भाटिनी पहिरे नीति सुहाये।
ओर भिषारी जने आए इछा पूरि सबै पहिराए।।
सोन रूप नग गाइ भुइँ पाटंबर गज घोर।
राजा खोलि भँडार सब, देत न लाय भोर।।
बरहँ दिन सब कुटुँब जँवावा घर घरहीं ते नेमति पावा ।
अमिरत पाच रसोई सानी सुने नेहि नाउँ भूख तिन भागी ।।
देव देस जहि बर न हाई , का बरनी तेही राज रसोई ।।
जहि जस भाएव राँधा कोरा, नेगिह देत न लाएव भोरा ।।
अपने छीर माइ सुत पोषा, अपने हिय लाइ संतोषा ।
निसि दिन हिये लाएसुख लहही चारि नैन मुख लागे रहही ।।
प्रथमहि जैस पियाइअ छीरा, वस भाव पुनि देइ सरीरा ।
और न दूध पियाइ, पड़े छाव सो ततु ।
तेहि कारन बुधिवत नर, प्यावहिं छीर सुततु ।।15

विद्यारंभ संस्कार

जन्मोत्सव के समान ही हिंदू समाज में विद्यारंभ के संस्कार को विशेष महत्व प्रदान किया है। हिंदी सूफी प्रेमाख्यान परंपरा के प्रायः सभी कवियों ने अपने कथा काव्यों के चरित नायकों के विद्यारंभ का वर्णन किया है। इन प्रेमाख्यानों में निम्नांकित अनुसार विद्यारंभ का वर्णन उपलब्ध होता है :–

मिरगावती में वर्णित

(बरिस) पाँच मँह भयउ सवाई । राजै पँडितहिं कहा बुलाई ।।
तुम्ह सब यह कँह गुन सिखराहु । पढ़ ओराइ तो बान बुझावहु ।।
पंडित आइ पढ़ावइ लागे । जो कछु गुन तेहि चित मँह जागे ।।
दस रे बरिस महँ पण्डित अस भा, पोथा बाँच पुरान ।
हेंगुरी खेल बेझ भल मारै, नागर चतुर सुजान ।16

पदमावत में वर्णित

पाँच बरस मँह भइ सो बारी । दीन्ह पुरान पढ़ै बैसारी ।। भै पदमावति पण्डित गुनी । चहु खण्ड के राजन सुनी ।।

चित्रावली में वर्णित

कवि उसमान ने 'चित्रावली' प्रेमाख्यान में विद्यारंभ का विस्तार से वर्णन किया है–

गहि भुज कुँजर पाय तर मेला, कहसि कि तुम गुरु एह तुम चेला ।
जहँ लहुँ विद्या तुमह पढ़ा औ जिय भा संतोष ।
आपन सुत सम जानि के देत न लाएहु धोष ।।
पंडित रहसी आसिष दीन्हा अग्या राज परछि सिर लीन्ह ।
अस चित लाइ गुरु समुझावा थोरे दिवस गुन हिरदै छावा ।।
अमरकाश व्याकरन बखाना जोग, वैद्यकन्हि कै सब जाना ।।
पिंगल लघु दीरघ दिढतासी, कहहि माँझ छद चोरासी ।
पढी सँगात ताल देखरावा एक सुर मँह दसराग सुनावा ।।
जोतिष मह काइ बाद न आटा एक पल सहस बार के बाटा ।
अस भुगाल बखानि सुनावा पल मँह मनु पुहमी फिरि आवा ।।
पढि गुनि चौदह बरश लगु दस औ चारि निधान ।
निपुन दुवा दस भाव मँह सब पढि पटु सुजान ।।17

उर्पयुक्त भावों से समानता रखते हुए कवि मंझन ने 'मधुमालती' में विद्यारंभ संबंधी वर्णन किया है।

विवाह संबंधी लोकाचार

हिंदी सूफी प्रेमाख्यान काव्य परंपरा के कवियों ने हिंदुसमाज में विवाह संबंधी परम्पराओं और लोकाचारों का सूक्ष्म निरीक्षण किया है। इन कवियों ने नायक–नायिका के विवाह संबंधी लोकाचारों का विस्तार से वर्णन किया है। इन लोकाचारों के अंतर्गत विवाह का लग्न, विवाह की आवश्यक तैयारी, निमंत्रण भेजना, विवाह के घर घर की सजावट, मंगलाचार, बरात, जेवनार, पाणिग्रहण संस्कार के लिए मंडप का निर्माण व सजावट, सप्तपदी भांवरे, कन्या की विदाई, सुहाग रात आदि का मनोरम चित्रण किया है। इन लोकाचारों से संबंधित सभी कवियों के वर्णनों में समानता देखने को मिलती हैं। विवाह संबंधी इन रीति रिवाजों और लोकाचारों का वर्णन निम्नांकित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है :–

चांदायन में विवाह संबंधी लोकाचार

मुल्ला दाऊद ने कथा नायिका चांदा के विवाह संबंधी लोकाचारों का यथास्थान वर्णन किया है। सर्वप्रथम चांदा के पिता महर के पास चांदा के रिश्ते के लिए बावन के पिता जैत की ओर से प्रस्ताव लेकर ब्राह्मण और नाई आते हैं। सहदेव महर ने भेजी हुई सुपारी स्वीकार कर

ब्राह्मण को सम्मानित करते हुए बावन के लिए चांदा को देने का वचन दे दिया " दीत चंदा बावन कहं, तीरि लाड करतार।" बावन के पिता ने अपने आत्मीयों से कहा–महर ने चांदा बावन को दी है चलकर उसे ब्याह लायें बारात के स्वागत और ठहरने, जेवनार आदि के उत्तम प्रबंध किये गये चांदा के पिता ने जैत को बहुत सारा धन दायज में दिया। तीस गांव, साठ भैंसे द्रव्य से भराये पचास घोड़े लाख–लाख टंके बांधे हुए दिये । एक सहस्र सेवक सेविकाएं दी । हीरे–मोती लगे हुए वस्त्र दायज में दिए।18

'मिरगावती' में कवि ने कथा नायक के बहुपत्नीत्व अर्थात् बहु विवाह का निरुपण किया है । कथा नायक राजकुँवर को पहले राक्षस की कैद से मुक्त कराई गयी रूपमणी से विवाह करने के लिए बाध्य होना पड़ता है फिर कंचननगर पहुंचने पर अपनी प्रेमिका मिरगावती से पुनः दूसरा विवाह करता है। कवि ने मिरगावती में विवाह संबंधी रीति रिवाजों का निम्नांकित रूप में वर्णन किया है :–

पसरा काज बियाह कों आवा । नेउता लोग देस सब आवा ।।

होइ लाग जेवनार अपारा । जेंवन कहं सब लोग हंकारा ।।

फीका मीठा लोन कर खट्टा, अहा कसैला ईंत ।

खीर दहिउं घिउ मांस और अन्न आए पांचों अंब्रीत ।।

सोन सिंहासन छात संवारा । मुकुट बाँधि कुंवर बैठारा ।।

रूपमनि कर जैंमारा गही । आनि कुंवर सिर ऊपर दिही ।।

गाँठि जोरि कै भंवरी दीही । रीत–चार कुल अही सो कीही ।।

दाइज अस कै दीन्ह, जग अइस न दीनहि काहु ।

आधा राजपाट भंडारो, बरिस सहस दस खाहू ।।19

मिरगावती में लौकिक अचार व्यवहार के संबंध में डॉ•शिवगोपाल मिश्र का कथन है कि " सूफी कवियों ने जनता के मनोरंजन के लिए उन्हीं की भाषा में उन्हीं की कथाओं को प्रेमाख्यानों में स्थान दिया, जिसके कारण उनके काव्यों में अनेक ऐसे शब्द एवं रीति–रिवाज आ गये हैं जिनकी ओर यहां पर संकेत करते हुए प्रसन्नता होती है । 'मिरगावती' में ब्याह आदि के समय, मंडप का गाड़ा जाना, भांवरी पड़ना, उत्सवों पर नेग देने की प्रथा, बधाई बजाना और मंगल आदि का गाया जाना आदि ऐसे लौकिक आचार व्यवहार हैं जिनका संकेत मात्र ही उनके तत्कालीन प्रचलन का द्योतक है।"20

पदमावत में विवाह संबंधी लोकाचार

जायसीकृत पदमावत के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 'पदमावत' में विवाह के अवसर पर होने वाले सभी लोकाचारों का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। रत्नसेन के लगन के निश्चित हो जाने पर विवाह की तैयारी प्रारंभ कर दी गई। सिंहलगढ़ में सभी को निमंत्रण भेजा गया। बाजे बजाये गये। राजमहल में आनंद छा गया। मंडप बनवाया गया। रत्नसेन के जोगी के वेश को उतारकर वर का वेश पहनाया गया। मोर मुकुट बाँध कर राजा को घोड़े पर सवार कराया गया। सोलह हजार राजकुमार बाराती बनकर चले। बारात के राजमहल के समीप पहुँचने पर सखियों के साथ पद्मावती वर को देखने के लिए धौराहर पर चढ़ी। बारात का भव्य स्वागत हुआ। स्वर्ण मंडित चित्रशाला में बारात को ठहराया, फिर जेवनार हुई। जेवनार के बाद खाँड़ का शरबत घुमाया गया। वर–वधू की गांठ जोड़ी गयी। वर–वधू का गोत्रोच्चार हुआ। स्त्रियों ने मंगलगान किया। सप्तपदी भाँवरें हुयी। पद्मावती रत्न जड़ित शैया पर बैठी। फिर सुहागरात हुई। फिर विधिवत वधू को विदाई दी गई। उक्त लोकाचारों से संबंधित निम्नांकित पंक्तियां द्रष्टव्य हैं :–

लगन धरा औ रचा बियाहू । सिंघल नेवत फिरा सब काहू ।।

बाजन बाजे कोटि पचासा । भा आनंद सगरौं कैलासा ।।

रचि रचि मानिक मांडव छावा ।21

चंदन खांभ रचे बहु भांति । मानिक दिया बारहिं दिन राती ।।22

रतन सेन कहं कापड़ आए । हीरा मोती पदारथ लाए ।।

कुंवर सहस दस आइ सभागे । विनहिं करहिं राजा संग लागे ।।23

बांधि मोर सिर छत्र देइ, बेगि होहु असवार ।।24

पद्मावति धौराहर चढ़ि । दहुं कस रवि जेहि कहं ससि गढ़ी ।।25

आइ बजावति बैठि बराता । पान फूल सेंदुर सब राता ।।

मांझ सिंहासन पाट संवारा । दूलह आनि तहां बैसारा ।।26

होइ लाग जेवनार पसारा । कनक पत्र पसरे पनवारा ।।27

औ छप्पन परकार जो आए । नाहिं अस देख, न कबहुं खाए ।।

जेंवत अधिक सुवासित, मुँह में परत बिलाइ ।

सहस सवाद सो पावै, एक कौर जो खाइ ।।28

कंत लीन्ह दीन्हा, धनि हाथा । जोरी गांठ दुऔ एक साथा ।।

भइ भाँवरि नेवछावरि, राजा चार सब कीन्ह ।

दायज कहौं कहां लागि? लिखि न जाइ जत दीन्ह ।।29

पुनि तहं रतन सेन पगु धारा । जहां नौ रतन सेज संवारा ।।30

मधुमालती में वैवाहिक लोकाचार

मंझन ने मधुमालती में विवाह संबंधी लोकाचारों तथा परंपराओं का विस्तार से वर्णन किया है। कथा नायक मनोहर की धर्म बहिन पेमां के पिता चित्रसेन विवाह के निमित्त राजा विक्रमराज के घर पहुंच गये और विवाह संबंधी मंत्रण की। लग्न ओर मुहूर्त के लिए हरिगुन पांडे

को बुलाकर कहा, " गणना कर राशि का मिलान देखो । " तब पंडितों ने कुंडलियों (वर–वधू की) का मिलान किया ग्रह नक्षत्र देखे। शुभ मुहूर्त की गणना कर विवाह का दिन निश्चित किया गया। पेमां के पिता राजा चित्रसेन ने वर पक्ष की ओर से मनोहर के विवाह का बधावा आयोजित किया। राजकुमार मनोहर के कर में कंकण सूत्र बांधा गया। समस्त परिजन भृत्यादि को सजा कर तैयार किया गया। वे कुंकुम केशर मिलाकर सुगंधित उबटन राजकुमार के शरीर में लगाते थे। सात दिनों की लगन कुमार के सिर पर इस प्रकार बीत रही थी जैसे सात युग बीत रहे हों। शुभ समय पर बारात ने प्रस्थान किया। बारात के सामने शुभ शकुन आये। बारात को विविध प्रकार से सजाया गया। संध्या होते होते बारात गोधूलि वेला में राजद्वार पर आई। जहां पर राजा ने जनवास सजाकर बारात को उतारा। शकुन का कलश लेकर दो स्त्रियां मंगलगीत गाते हुए आई। फिर वर की सास ने नेछावर और आरती भेज दी जिन्हें पेमा ने कुमार के सिर पर वार कर दसों दिशाओं में लुटा दिया। विवाह के अवसर पर कन्या पक्ष की सुंदरियाँ वर पक्ष के माता–पिता को अर्थात् समधिन और समधी को गालियां गाकर सुनाती हुई परिहास करती हैं। कवि मंझन ने इस रिवाज का बहुत सुंदर वर्णन किया है जैसा कि निम्नांकित वर्णन से स्पष्ट है :–

बहुरि जनी दस पाछे आई । सुरस कंठ मांतहि गरियाई ।

चित्रसेन कहं समधी नाएं । गारी देहिं हरखि रस माएं ।

पेमां कहं ताराचंद लाई । गारी देहिं औ करहिं भंडाई ।

औ मधुरा कहं समधिनि जानी । गारी देहिं औ करहिं न कानी ।

औ मधुमालती चेरि थपाई । पेमां कहं गरियावहिं जाई ।

फुनि किछु दरब देवाएउ कुंवर ओन्हंहि अनुमान ।

हरख अनंद किलोल सेउं फिर सभ करत बखान ।।31

इसके बाद विक्रम राज ने दो ब्राह्मणों को पाणिग्रहण संस्कार करने के लिए भेजा राजकुमार और मधुमालती को यथा स्थान बिठाकर संस्कार संपन्न कराया :–

फुनि दै भांवरि कुंवर पानि पर वर कामिनि कर राखि ।

कन्यादान कीन्ह नृप, देव पितर दै साखि ।।32

इसके बाद कवि ने दोनों की सुहागरात का वर्णन किया है । मधुमालती के पिता ने दायज देकर बारात को वस्त्रा भूषण देकर विदा किया।

चित्रावली में वैवाहिक रीति–रिवाज

'चित्रावली' के वर को राजमहल में बुलाकर बहुत सुंदर आसन पर बिठाया गया । वह राजकुमार प्रत्यक्ष इन्द्रके समान दिखाई दे रहा था। जो भी उसको देखता था वह लुब्ध होकर अपनी दृष्टि जमाये रहता था। देखने वाले को घर जाने की भी इच्छा नहीं होती थी। राजा चित्रसेन उसकी रानी और बुद्धिमान परेवा ने मंत्री को बुलाकर सारी बात बताई और सबने एक मत होकर कहा कि अब इस व्यवहार में विलम्ब नहीं किया जाना चाहिए और उसी समय ज्योतिषी आये उन्होंने राशि और वर्ग की गणना करके निश्चित किया कि बैसाख बदी पंचमी को जब मीन लग्न होंगा तब पाणिग्रहण संस्कार करना उचित होगा। इस प्रकार पण्डितगण लगन लेकर चले, महता ने राजा से विनती की मैंने अपनी सम्पत्ति तुम्हें दे दी अब आप आज्ञा दो तो मैं आगे की व्यवस्था करूं आप कुंवर की बारात लेकर सँवार कर पधारें। यह सुनकर राजा रानी अत्यन्त हर्षित हुये। जब से बेटी पैदा हुई थी तब से राजा रानी के मन में यह चिंता बनी रहती थी कि किस तरह से बेटी की बारात को विदा किया जायेगा राजा रानी की वार्तालाप को सुनकर सभी हर्ष में विभोर हों गये और चारों तरफ निमंत्रण भेजे गये और सगे सम्बन्धी आकर के एकत्रित हो गये। राजकुमार के माथे पर जड़ाऊ मुकुट पहनाया गया फिर उसकी आँखों में काजल डाला गया। नजर उतारी गई राजकुंवर के गले में हार, हमेल और फूलों की मालाएं पहनाई गई उसके मुख में पान और कपूर खिलाये गये इस तरह से राजकुमार अश्व पर सवार हुआ। नगाड़ा बजा शहनाई और भेरी बजाई गई । पृथ्वी पर सात कोस के फेर में इन नगाड़ों और शहनाई की ध्वनि सुनाई दी।33

सुहासिनी स्त्रियाँ अपने सुरीले कण्ठ से गीत गाती हुई चली वे चन्दन के समान बदन वाली स्त्रियाँ गाती हुई सुन्दर लग रही थी । कलावंत कत्थक नृत्य और गाते हुये चल रहे थे । भाट स्तुतियाँ सुना रहे थे । इस तरह से राजा चित्रसेन के द्वार पर बारात आकर पहुँच गई।34

अप्सराओं के समान दो सुन्दरियाँ स्वर्णकलश में जल भरकर तथा दही आदि के द्वारा कुँवर को सगुन देकर बिठाया। फिर उसके बाद कन्या पक्ष के दूसरे लोग आये उन्होंने दूल्हे को आदर दिया । दासियों ने लोकगीतों के माध्यम से गालियाँ सुनाई वे जब गाली गाती थी तब उनका मुख लज्जा से प्रसन्न हो जाता था। राजकुमार के श्वसुर ने नेक देते हुये देखकर अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र बज उठे जिनको सुनकर लोग तृप्त हो गये । चार हजार दीपक जलाकर रास्तों को प्रकाशित किया । वहाँ इतना प्रकाश हो गया जितना सूरज और चाँद भी उजाला नहीं कर सकते थे । संसार में जितना अंधेरा था सब मिट गया।35

चारों ओर अग्नि चक्र फेरी गई ऐसा लगता है जैसे पूर्ण चन्द्रमा उतरकर पृथ्वी पर आ गया। आतिश–बाजी की गई और जब आकाश में हवाई चली तो रत्न और पदार्थ बिखराये गये। अनेक प्रकार के आतिश के पटाखे छोड़े गये चारों ओर चंद्र ज्योति का उजाला हो गया ऐसा लगता था मानो रात में ही सूर्य का प्रकाश हो गया है । आकाश में चारों ओर माहताब के समान पटाखे छोड़े गये। भूमिचक्र नामक तमाशा दिखाया गया मानों पृथ्वी पर चारों दिशाओं में फूल खिल गये। दोनों सगों (समधियों) ने पान फूल से सगोती (सज्जनगोठ नामक नेकचार) की रस्म अदा का निर्वाह किया। भोजन में इस सज्जनगोठ में विभिन्न प्रकार के पकवान का आदान प्रदान

हुआ जो अपने से भिन्न स्वाद दे रहे थे। इस प्रकार कवि उस्मान ने हिंदू रीति रिवाजों का सूक्ष्म रूप में सुंदर चित्रण किया है।36

कवि उसमान ने हिंदू संस्कारों का जिस प्रकार से वर्णन किया है वह उसकी सूक्ष्म निरीक्षण क्षमता का परिचायक है। उसमान ने बारात के भोजन अर्थात् जेवनार का रोचक वर्णन किया है उसमान लिखते हैं कि जनवासे में बारात को बैठाकर भवन में रसोई का प्रबन्धन किया गया। कुंकुम, चंदन और मेद से चौका देकर वेदी बनाई गई । सोने के थाल बनाये गये । दोना पत्तल आदि लाये गये। जल में कपूर एवं सुगन्धित पदार्थ मिलाये गये । संसार में जितने स्वादिष्ट व्यंजन हैं वे पकवान एक साथ लाये गये । जैसा कि निम्नांकित वर्णन से स्पष्ट होता है :–

जनवासे बरात बैसारी, मंदिर मॉह रसोई सारी।
चौका दे आँगन भरि बेदी, लीपा चंदन कुमकुम मेदी।।
सोन रूप के थार बनाए दोना पतरी बारी लाए।
जूडे. जल जहि लाग पिआसा, मलि कपूर कुमकुमा बासा।।
औ जन सोध जगत महँ आए, सब पकवान साथ लगवाए।
झारी गडुआ लोग सँभारी लै जल पहिले पावँ पखारी।
बैसि गए सब पातिन्ह पाँती, साथ साथ सब अपने जाति।।
पहिले डारी पातरी, तौ पुनि राखे थार।
लगे परोसन सहस जन भाँति भाँति परकार।।37

अत्यन्त अपूर्व मंडप का आच्छादन किया गया। रेशमी जरी के पर्दों से मंडप को सजाया गया । सोने के खम्भे (स्वर्ण खंभ) बीच में बीच में लगाये गये उनको देखकर दृष्टि चौंक जाती थी। आम के पत्तों की बंदनवार लगाई गई मंडलाकार दीपक जलाये गये जो ऐसे लगते थे मानो चारों ओर चाँद और तारे झिलमिला रहे हैं जो भी अपनी दृष्टि को घुमाकर देखता था वो नक्षत्रों को याद करके प्रदक्षिणा देने लगता था। स्तम्भ के नीचे कलश बना करके उसमें चौमुख दीपक जलाये गये चारों दिशाओं में प्रकाशमान दीपक सगुन दे रहे थे । इस प्रकार राजकुमार को आदरपूर्वक लाकर आसन पर बिठाया गया। चित्रसेन के परिवार की बालिकाएँ ऐसी लग रहीं थी मानों विधाता ने अपसराओं को पृथ्वीं पर उतार दिया है । ये बालिकाएँ एक दूसरे से कंधा मिलाकर वर अर्थात् कुंवर को देखने के लिए आई इन बालिकाओं ने मंडलाकार होकर राजकुंवर को देखा उनको राजकुमार ऐसे लग रहा था जैसे राजकुमार कोई देवता हों या कल्पवृक्ष हों राजकुमार के अधर ऐसे लग रहे थे मानो अमृत से सींचे गये हो । राजकुमार के नेत्र खंजन पक्षी की तरह चंचल तथा तीक्ष्ण थे। ऐसा लग रहा था मानो ईश्वर ने कमल के फूल को पृथ्वी पर ही उतार दिया है। राजकुमार के कर्णफूलों में गज मोती चमक रहे थे और ऐसा लग रहा था मानों चारों ओर मोती झड़ रहे हैं।38

वेद के ज्ञाता चतुर ब्राह्मण ने वेदी के पास आकर होम का जाप किया। और अग्नि प्रज्वलित की कुंवर के दोनों नेत्र चकोर की तरह चकित हो रहे थे और वो ये देखना चाह रहे थे कि पूर्ण चन्द्रमा किस तरफ उदित हो रहा है । कुंवर की दृष्टि चित्रावली को देखने के लिए इधर–उधर चंचल हो रही थी। शुभ मुहूर्त में नव युवती चित्रावली को लाकर बिठाया गया। सूर्य के उदय होने से अंधकार चला गया और चन्द्रमण्डल में तारे उदित हो गये अर्थात् राजकुंवर सूर्य और चित्रावली चन्द्रमा के समान वेदी पर शोभायमान हो रहे थे । ब्राह्मण ने वेद का पाठ किया और वेदी के सामने चित्रावली और सुजान को बैठाया गया । उसी समय दोनों का गठजोड़ किया गया।

जउँ जउँ फेरी देहि निज हाथ अधिक अरूझेरि।
दिढ बंधन निज एक है ओर अमिरथा घेर।।39

इस प्रकार चित्रसेन ने स्वंस्तिमंगल आशीष सुनाते हुये कन्या.दान किया और राजकुमार सुजान और चित्रावली दोनों ने सुहागरात के लिये प्रस्थान किया। राजा चित्रसेन ने दायज में हाथी घोड़े हीरा नग माणिक मोती पाटम्बार (जरी के रेशमी वस्त्र) पाँवरी (पादुकाएँ) रत्न जड़ित खड्ग मुठिका भेंट की इस प्रकार अनगिनत द्रव्य देकर बेटी जंवाई को विदा किया ।

प्रेमाख्यान काव्य में अन्त्येष्टि संस्कार

हिन्दी के प्रतिनिधि सूफी प्रेमाख्यान काव्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इन कवियों ने हिन्दुंओं के प्रमुख संस्कारों का ही वर्णन किया है। उपर्युक्त वर्णन में इन कृतियों में निरुपित संस्कारों का विस्तार से विवेचन किया गया है। हिन्दू धर्म में मनुष्य के गर्भाधान से लेकर और मृत्यु तक जिन संस्कारों अथवा अन्त्येष्टि संस्कारों को भी महत्वपूर्ण माना गया है। हिन्दी की सूफी काव्य परम्परा में प्रस्तुत शोध–पत्र में प्रतिनिधि रचनाओं के रूप में चांदायन, मिरगावती, पद्मावत, मधुमालती तथा चित्रावली को ही प्रस्तुत अध्ययन में सम्मिलित किया गया है । इनमें चांदायन, मधुमालती तथा चित्रावली सुखांत काव्य है । इन प्रबंध काव्यों में नायक अथवा नायिका की मृत्यु, तथा अन्त्येष्टि संस्कार का वर्णन नहीं मिलता जबकि पद्मावत और मिरगावती में नायक की मृत्यु उसकी अन्त्येष्टि तथा नायक के साथ उसकी पत्नियों के साथ में सती होने का भी वर्णन उपलब्ध होता है । मिरगावती की प्रेम कथानुसार एक पारधी राजकुंवर को वन में सिंह के आन की सूचना देता है और बताता है कि सिंह ने एक हाथी के मस्तक को खा लिया है । इस बात पर राजकुंवर उस सिंह को मारने का निश्चय करता है और पारधी के साथ वन में जाता है जहाँ उसे राजकुवर सोते हुए देखता है राजकुंवर के आने की आहट को पाकर सिंह जागकर गरजता है और राजकुंवर सिंह पर बाण मारता है। यद्यपि सिंह खण्ड खण्ड होकर मर जाता है लेकिन बाण टकराकर कुंवर के हृदय पर लग जाता है। इससे कुंवर और सिंह दोनों की मृत्यु हो जाती है।40 जब इस घटना की सूचना मिरगावती को मिलती है तो मिरगावती और रूपमणि दोनों ही रानियाँ शोक से संतप्त होकर रोती और बिलखती है तथा राजपूत परिवारों की परम्पराओं के अनुसार मिरगावती व रूपमणि अपने पति के साथ सती हो जाती हैं। कवि ने इस प्रसंग का अत्यंत

मार्मिक शब्दों में वर्णन किया है जैसा कि निम्नांकित पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है :–

रूपमनि फुन वैसहिं मरि गई। कुलवन्त सत सेंउ सती भई।।

बाहर वह भीतर यह रौरो। घर बाहर मँह उठा अँदोरो।।

आजु सँघारत पुहुमि समेंटहिं। जो सिरजसि सो सब मेंटहिं।।

गाँग तीर लइके सरि रचा। पूजी अवधि किही हुत बचा।।

राजा संग रानी चौरासी। लइ सब गवनी वै निरासी।।

मिरगावती औ रूपमनि, लइके जरीं कुँवर क साथ।

भसम भई सब जरि कै, चीन्ह रहा नै गात।।41

पद्मावत में महाकवि जायसी ने राजा रत्नसेन की मृत्यु और उसके साथ पद्मावती तथा नागमती के सती होने के अंतिम संस्कार का प्रभावपूर्ण तथा करुण चित्र प्रस्तुत किया है। जायसी को हिन्दू परिवारों में होने वाले सभी लोकाचारों का अच्छा ज्ञान था यही कारण है कि उसने हिन्दू परम्पराओं व लोकाचारों का बहुत गहराई से दिग्दर्शन करवाया है। जायसी ने पद्मावत में लिखा है कि राजारत्न सेन के स्वर्गवासी होते ही उसकी दोनों पत्नियाँ रानी नागमती, पद्मावती सती होने के लिए तैयार हुई उन्होंने सुन्दर रेशमी परिधान पहने अपनी माँग में सिंदूर लगाया और पूर्णतया सज–धज के अपने पति के शव के निकट आकर बैठ गई। राजा के लिए चंदन, अगर एकत्र करके चिता बनाई गई। राजा रत्नसेन के शव को गाजे बाजे के साथ श्मशान भूमि तक ले जाया गया जहाँ पर दोनों रानियों ने दान पुण्य किये और दोनों ही रानियों ने अपने पति की सात बार परिक्रमा कर राजा की चिता के साथ बैठकर अपने प्रियतम को गले से लगाया और वे बीच चिता पर लेट गई और कहने लगी " हे स्वामी जीते जी तुमने हमें अपने गले से लगाया था अब हम भी तुम्हारा कंठ नहीं छोड़ेंगी जो तुमने हमारे साथ पाणिग्रहण संस्कार के समय जो गाँठ बाँधी थी वह गाँठ छूट नहीं सकती अब हम और तुम दोनों पर लोकों में भी साथ निभायेगें। इसके बाद चिता में आग लगाकर दोनों रानियाँ पति के साथ सती हो गई।

सर रचि दान पुन्नि बहु कीन्हा। सात बार फिरि भाँवरि लीन्हा।।

एक जो भाँवरि भईं बियाही। अब दुसरे होइ गोहन जाहीं।।

जियत, कंत! तुम हम्ह गर लाई। मूए कंठ नहिं छोड़हिं सांई!।।

औ जो गाँठि,कंत! तुम्ह जोरी। आहि अंत लहि जाइ न छोरी।।

यह जग काह जो अछहि न आथी। हम तुम, नाह! दुहूँ जग साथी।।

लेइ सर ऊपर खाट बिछाई। पौढ़ी दुवौ कंत गर लाई।।

लागीं कंठ आगि देइ होरी। छार भई जरि, अंग न मोरी।।

रातीं पिउ के नेह गइं, सरग भएउ रतनार।

जो रे उवा, सो अंथवा, रहा न कोइ संसार।।42

इस प्रकार हिंदी के प्रेमाख्यान काव्य परम्परा के उपर्युक्त कवियों ने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज की प्रचलित परम्पराओं रीति रिवाजों अथवा लोकाचारों का गहन तथा विस्तार से निरुपण किया है ।

शोध पत्र का उद्देश्य

हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है। इस काल के साहित्य का मुख्य उद्देश्य समाज में ईश्वर के प्रति भक्तिभावना, चारित्रिक शुचिता, अंधविश्वास एवं आडंबर का विरोध, सामाजिक समरसता व भाईचारा, आध्यात्मिक उन्नति, ज्ञान तथा प्रेम भावना का प्रचार प्रसार था। इस युग के साहित्य में भक्ति मंदाकिनी की चार धाराएं प्रवाहित हो रही थी। सगुण उपासना के अंतर्गत 1.रामभक्ति काव्य धारा 2. कृष्णभक्ति काव्य धारा। निर्गुण उपासना के अंतर्गत 1. ज्ञानमार्गी काव्यधारा तथा 2.प्रेम मार्गी काव्य धारा।

भक्तिमार्ग के इन सभी कवियों ने कविता के माध्यम से ईश्वर के प्रति अपनी आस्था को प्रकट करते हुए जनता भक्ति मार्ग की महिमा से परिचित कराया।इस प्रकार देश में भक्ति आंदोलन का सूत्रपात हुआ।

प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य भारतीय समाज में अपनी रचनाओं के माध्यम से ईश्वरीय प्रेम से परिचय कराने के साथ साथ मत मतांतरों के सीमित दायरे से बाहर प्राणिमात्र को प्रेम की शिक्षा देना था। यह शोध पत्र प्रेम–कहानियों में वर्णित प्रेम के आदर्श को जनसाधारण से साझा करना था। इस शोधपत्र के माध्यम से हिंदू मुस्लिम एकता को बल मिलेगा ऐसी अपेक्षा की जाती है।

हिंदी के इन सूफी कवियों ने अपनी रचनाओं में कहीं भी कट्टरता का प्रदर्शन नहीं किया है। इन्होंने प्रेम की भावना को ही सर्वोच्च स्थान दिया है, जैसाकि मलिक मुहम्मद जायसी ने लिखा है–

तीन लोक चौदह भुवन सबै परा मोहि सूझ।
प्रेम छांडि नहीं लों न किछु,जो देखा मन बूझ।।
– पदमावत ,राजा सुआ संवाद खंड, कड़वक संख्या 5/6-7

उपसंहार

सूफी कवि यह अच्छी तरह से समझते थे कि हिंदू समाज में संतान की उत्पत्ति को अनिवार्य माना गया है। विशेष कर पुत्र जन्म के बिना तो जीवन को निरर्थक समझा गया है।पुत्र के जन्म से ही वंश चलता है ,पुत्र ही पिता की अंत्येष्टि व पिंडदान करता है। इसलिए पुत्र प्राप्ति के लिए साधु–संतों की सेवा, अथवा किसी देवता की उपासना व तपस्या का उल्लेख मिलता है। भगवान राम और उनके भाइयों का जन्म भी ऋषि के अनुष्ठान से संभव हुआ था। प्रेमाख्यान काव्य परंपरा के कतिपय कवियों ने भी इसका संकेत दिया है।

पुत्र–जन्म के बाद पंडित,ब्राह्मण या ज्योतिषी को बुलाकर लग्नपत्र या जन्म कुंडली, ग्रहदशा भविष्य कथन आदि की जानकारी ली जाती है। तदनंतर छठ पूजन,नामकरण संस्कार, प्रीतिभोज,पहिरावनी आदि संस्कार संपन्न होते हैं इन लोकाचारों का सूफी हिंदी कवियों ने मनोरम,रोचक किंतु स्वाभाविक चित्रण किया है। सूफी

कवियों ने अपने कथानायक के विद्यारंभ संस्कार का भी वर्णन किया है। इस शिक्षा संस्था के अंतर्गत राजकुमारों को किस प्रकार की शिक्षा दी जाती थी इसका उल्लेख भी अपनी कृतियों में किया है।

भारतीय संस्कृति में विवाह नामक संस्था का अत्यंत महत्व रहा है। विवाह के समय भी अनेक रीति–रिवाज तथा लोकाचार संपन्न होते हैं।इन सूफी कवियों ने इन लोकाचारों का विशद् विवेचन किया है।

यह ध्रुव सत्य है कि इस संसार में जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। एतदर्थ मृत्यु के पश्चात् भी कुछ क्रियाएं भी संपन्न की जाती हैं जिसे अंत्येष्टि क्रिया कहते हैं। विवेच्य प्रबंध काव्यों में अंत्येष्टि क्रिया लोकाचार भी यथा प्रसंग निरूपण हुआ है।

समग्र रूप से विवेचन करने के उपरांत कहा जा सकता है कि हिंदी के सूफी प्रेमाख्यान काव्यधारा के कवि हिंदू समाज के चतुर चितेरे हैं। हिंदी साहित्य और हिंदू समाज इन कवियों का आभारी रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बृहत हिन्दी शब्द कोश (ज्ञान मंडल वाराणासी) पृ•सं•1291*
2. *हिन्दी साहित्य कोश, भाग1 (ज्ञान मंडल वाराणासी) पृ•सं• 780*
3. *मधुमालती, मंझन, संपादक डॉ• माताप्रसाद गुप्त, क•सं• 45/1–5*
4. *चांदायन, मुल्ला दाऊद, (सं•मा•प्र•गु•) क•सं• 32–33*
5. *मिरगावती, कुतुबन कृत, संपादक डॉ•परमेश्वरी लाल गुप्त, क•सं• 16–17.1*
6. *चित्रावली, उसमान कृत, संपादक जगमोहन वर्म्मा–महादेव खंड का सारांश*
7. *मधुमालती, मंझन, संपादक डॉ• माताप्रसाद गुप्त, क•सं• 49*
8. *मिरगावती, कुतुबन कृत, संपादक डॉ•परमेश्वरी लाल गुप्त, क•सं• 17*
9. *मधुमालती, मंझन, संपादक डॉ• माताप्रसाद गुप्त, क•सं• 50*
10. *चित्रावली, उसमान कृत, संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं• 50 तथा 51.1–2*
11. *चित्रावली, उसमान कृत, संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं• 51.3*
12. *पदमावत (जायसी ग्रंथावली), सं•रामचंद्र शुक्ल, जन्म खंड क•सं• 3*
13. *पदमावत (जायसी ग्रंथावली), सं•रामचंद्र शुक्ल, जन्म खंड क•सं• 1*
14. *मधुमालती, मंझन, संपादक डॉ• माताप्रसाद गुप्त, क•सं• 52*
15. *चित्रावली, उसमान कृत,जन्म खंड, संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं• 52*
16. *मिरगावती, कुतुबन कृत, संपादक डॉ•परमेश्वरी लाल गुप्त, क•सं•19/3–7*
17. *चित्रावली, उसमान कृत,जन्म खंड, संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं• 54/5–7 तथा क•सं• 55*
18. *चांदायन, मुल्ला दाऊद, (सं•मा•प्र•गु•) क•सं•38,39 तथा 40 से 46 तक*
19. *मिरगावती, कुतुबन कृत, संपादक डॉ•परमेष्वरी लाल गुप्त, क•सं•152 से 154 तक*
20. *मिश्र, डॉ•शिवगोपाल, कुतुबन कृत, मिरगावती, भूमिका पृ•सं•52–53*
21. *रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड क•सं•1.5*
22. *रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड क•सं•1.6*
23. *रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड क•सं•2/1–2*
24. *रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड क•सं•2/9*
25. *रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड क•सं•4*
26. *रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड क•सं•8/1व3*
27. *रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड क•सं•9/1*
28. *रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड क•सं•10/6 से 9 तक*
29. *रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड क•सं•15/ 5–9*
30. *रत्नसेन पद्मावती विवाह खंड क•सं• 19.1*
31. *मधुमालती, मंझन, संपादक डॉ• माताप्रसाद गुप्त, क•सं•445*
32. *मधुमालती, मंझन, संपादक डॉ• माताप्रसाद गुप्त, 446/6–7*
33. *चित्रावली, उसमान कृत,संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं• 514 से 517 तक*
34. *चित्रावली, उसमान कृत,संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं•518*
35. *चित्रावली, उसमान कृत,संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं•519*
36. *चित्रावली, उसमान कृत,संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं•521*
37. *चित्रावली, उसमान कृत,संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं•522*
38. *चित्रावली, उसमान कृत,संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं•528*
39. *चित्रावली, उसमान कृत,संपादक जगमोहन वर्म्मा क•सं•529*
40. *मिरगावती, कुतुबन कृत, संपादक डॉ•परमेश्वरी लाल गुप्त, क•सं• 410 से 418 तक*
41. *मिरगावती, कुतुबन कृत, संपादक डॉ•परमेश्वरी लाल गुप्त, क•सं•428*
42. *पदमावत (जायसी ग्रंथावली), सं•रामचंद्र शुक्ल,सती खंड, क•सं• 3*